

مُختَصَر

بِقِسْرِ الْمُنْزِلِ

لِلْعَلَّامَةِ الطَّبَّاطِبَائِيِّ

إعداد

كمال مصطفى شاكر

# مختصر تفسير الميزان

المؤلف ..... العلامة الطباطبائي  
ترتيب ..... مصطفى شاكر  
الناشر ..... مؤسسة عاشوراء قم المقدسة  
العدد ..... ٢٠٠٠ نسخة  
الطبعة ..... الاولى ١٤٢٨ هـ ٢٠٠٧ م  
المطبعة ..... نينوى  
الترقيم الدولي ..... X - ٣٢ - ٦٢٢٣ - ٩٦٤

مركز التوزيع : مكتبة النجار - (تقال) ٠٩١٢١٥٣٠٣٦٥  
E-mail : maktabat\_alnajar @ nassej . com

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

والحمد لله الذي أنزل على عبده كتاباً قيماً يهدي إلى الرشd ويشر المؤمنين الذين يعملون الصالحات أن لهم من لدنه أجراً حسناً.

والصلاة والسلام على من أرسله الله رحمةً للعالمين شاهداً ومبشراً ونذيراً وداعياً إلى الله بإذنه وسراجاً منيراً. وعلى آله الذين جعل مودتهم أجراً للرسالة والذين اختصهم بأنه يريد ليذهب عنهم الرجس ويبطهرهم تطهيراً وعلى الصحابة الذين اتبعوه في ساعة العسرة الذين كانوا مصداق قوله تعالى: ﴿مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكْعاً سَجْدًا يَلْتَزِمُ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ وَرَضَوْنَا سِيَمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِنْ أَثَرِ السُّجُودِ ذَلِكَ مِثْلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَمِثْلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَى عَلَى سُوقِهِ يُعْجِبُ الزُّرْعَ لِيُغَيِّظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْراً عَظِيماً﴾.

وعلى عباد الله الصالحين وملائكته المقربين وعلى كل من سار بهدي من الله إلى يوم الدين.

يظهر للنقاد في هذا التفسير أمور منها:

- استناد التفسير إلى آية أو سنة صحيحة، كلما كان هناك سبيل إلى ذلك.
- الاختصار في معظم الحالات على تفسير واحد، أو ذكر بعض الوجوه مع بيان أوجهها.
- تفسير المفردات وبيان المراد منها، وتقرير المعاني والغرض منها بأسلوب يسهل للناس تناوله مع مراعاة اختلاف طبقاتهم.
- استخدام ألفاظ من التفسير نفسها إذا لم يكن بالإمكان اختصارها؛ مع بيان معانيها.
- الإشارة إلى بعض المصطلحات العلمية التي يقرها القرآن.
- إظهار الغرض من كل سورة في بدايتها.
- ربط المعاني بروح العصر.
- إيضاح الشبهات التي ترد على السنة الناس حول تفاسير بعض الآيات.
- ترك العناية اللفظية حفاظاً على روح المعاني.
- عدم التعرض للأبحاث الفلسفية والتاريخية والعلمية والروائية. فالإيجاز الذي يهدف إليه الكتاب يغني عن الخوض فيها.

ومهما يكن من أمر، وتأسياً بقوله تعالى: ﴿وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا﴾ كان لابد للمسلمين في كافة أرجاء الأرض من الاعتصام بالقرآن وهو حبل الله والعروة الوثقى، ولذا كان هذا التفسير يهدف لشد المسلمين إلى هذه العصمة في عالم تتصارع فيه الأفكار وتتضارب فيه المصالح. فالقرآن عصمة في أمور كثيرة منها:

١ - عصمة الصفات الإلهية: فهو تعالى أحد صمد قويم قهار غفار خالق رازق عالم عادل، فله الأسماء الحسنى وله صفات الكمال والجمال والجلال.

٢ - تنزيهه تعالى عن النقص كالحديث والعجز والظلم.

٣ - الدعوة إلى التوحيد الخالص عن شوب الوثنية والشرك.

٤ - واجب الإنسان الاستخلافي وفق شروط الخلافة التي جاء بها الرسل.

٥ - التأكيد على صلاحية القرآن والسنة لكل زمان ومكان والتأكيد على أن الله يريد أن يَمُنَّ على الذين استضعفوا في الأرض ويجعلهم أئمة ويجعلهم الوراثين، مع التأكيد على أن وعد الله للمؤمنين بالنصر منجز إذا استكملوا شروطه.

٦ - التذكير بأن الدنيا مزرعة للآخرة، ليلوكم أبكم أحسن عملاً. في تطبيق الشرعة والمنهاج الذي يشمر العاقبة التي يسعى إليها الإنسان باختياره.

لذا كان القرآن عصمة في مجالات العلوم والتشريع والقصاص والتاريخ والمعاملات والأخلاقيات وتحديد الخطوط بين المعروف والمنكر.

فيا إلهي تقبل مني، فلاني أتقرب إليك بذكرك وأستشفع بك إلى نفسك أسألك بجودك وكرمك أن تدنيني من قربك وأن توزعني شكرك وتلهمني ذكرك وتذيقني حلاوة عبادتك ولذيل مناجاتك وتوردني رياض حبك.

واغفر لي يارب ما قصرت في جنبك، وما قصر عنه وسعي في هذا الكتاب. واغفر لوالدي وارحمهما كما ربياني صغيراً، وللمؤمنين والمؤمنات يوم يقوم الحساب. وتغمد صاحب الميزان برحمتك، وتفضل بكرمك على كل من ساهم في التفسير.

وآخر دعواتنا أن الحمد لله رب العالمين.

المؤلف

| السورة   | دفعه | دفعه | السورة   | دفعه | دفعه |
|----------|------|------|----------|------|------|
| الفاتحة  | ١    | ٧    | الرؤم    | ٣٠   | ٤٦٦  |
| البقرة   | ٢    | ٩    | لقمان    | ٣١   | ٤٧٣  |
| آل عمران | ٣    | ٦٧   | السجدة   | ٣٢   | ٤٧٧  |
| النساء   | ٤    | ٩٩   | الأحراب  | ٣٣   | ٤٨٠  |
| المائدة  | ٥    | ١٣١  | سبا      | ٣٤   | ٤٩٠  |
| الأنعام  | ٦    | ١٦٠  | قاطر     | ٣٥   | ٤٩٦  |
| الأعراف  | ٧    | ١٨٩  | يس       | ٣٦   | ٥٠٢  |
| الأنفال  | ٨    | ٢١٧  | الصفافات | ٣٧   | ٥٠٨  |
| التوبة   | ٩    | ٢٢٩  | ص        | ٣٨   | ٥١٥  |
| يونس     | ١٠   | ٢٥١  | الرؤمر   | ٣٩   | ٥٢٠  |
| هود      | ١١   | ٢٦٤  | غافر     | ٤٠   | ٥٢٩  |
| يوسف     | ١٢   | ٢٨٠  | فصلت     | ٤١   | ٥٣٩  |
| الرعد    | ١٣   | ٢٩٦  | الشورى   | ٤٢   | ٥٤٥  |
| إبراهيم  | ١٤   | ٣٠٤  | الزخرف   | ٤٣   | ٥٥١  |
| الحجر    | ١٥   | ٣١٣  | الدخان   | ٤٤   | ٥٥٨  |
| التخل    | ١٦   | ٣١٨  | الحاشية  | ٤٥   | ٥٦١  |
| الاسراء  | ١٧   | ٣٣٥  | الأخفاف  | ٤٦   | ٥٦٤  |
| الكهف    | ١٨   | ٣٤٩  | محمد     | ٤٧   | ٥٦٩  |
| مريم     | ١٩   | ٣٦٢  | الفتح    | ٤٨   | ٥٧٣  |
| طه       | ٢٠   | ٣٧٠  | الحجرات  | ٤٩   | ٥٧٧  |
| الأنبياء | ٢١   | ٣٨٢  | ق        | ٥٠   | ٥٨٠  |
| الحج     | ٢٢   | ٣٩٣  | الذاريات | ٥١   | ٥٨٢  |
| المؤمنون | ٢٣   | ٤٠٣  | الطور    | ٥٢   | ٥٨٥  |
| النور    | ٢٤   | ٤١٢  | التجم    | ٥٣   | ٥٨٨  |
| الفرقان  | ٢٥   | ٤٢١  | القمر    | ٥٤   | ٥٩٠  |
| الشعراء  | ٢٦   | ٤٢٩  | الرحمن   | ٥٥   | ٥٩٣  |
| الشمل    | ٢٧   | ٤٣٩  | الواقعة  | ٥٦   | ٥٩٦  |
| القصاص   | ٢٨   | ٤٤٧  | الحديد   | ٥٧   | ٥٩٩  |
| العنكبوت | ٢٩   | ٤٥٨  | الحجادة  | ٥٨   | ٦٠٤  |

| الشورة    | رقمها | الصفحة | الشورة | رقمها | الصفحة |
|-----------|-------|--------|--------|-------|--------|
| الحشر     | ٥٩    | ٦٠٧    | سنة    | ٦٠٧   | سنة    |
| الممتحنة  | ٦٠    | ٦١١    | سنة    | ٦١١   | سنة    |
| الصف      | ٦١    | ٦١٣    | سنة    | ٦١٣   | سنة    |
| الجمعة    | ٦٢    | ٦١٥    | سنة    | ٦١٥   | سنة    |
| المنافقون | ٦٣    | ٦١٦    | سنة    | ٦١٦   | سنة    |
| التفكائن  | ٦٤    | ٦١٨    | سنة    | ٦١٨   | سنة    |
| الطلاق    | ٦٥    | ٦٢٠    | سنة    | ٦٢٠   | سنة    |
| التحريم   | ٦٦    | ٦٢٢    | سنة    | ٦٢٢   | سنة    |
| المثلك    | ٦٧    | ٦٢٤    | سنة    | ٦٢٤   | سنة    |
| القلم     | ٦٨    | ٦٢٦    | سنة    | ٦٢٦   | سنة    |
| الحاقة    | ٦٩    | ٦٢٨    | سنة    | ٦٢٨   | سنة    |
| المعارج   | ٧٠    | ٦٣٠    | سنة    | ٦٣٠   | سنة    |
| نوح       | ٧١    | ٦٣٢    | سنة    | ٦٣٢   | سنة    |
| الجن      | ٧٢    | ٦٣٤    | سنة    | ٦٣٤   | سنة    |
| المزمل    | ٧٣    | ٦٣٦    | سنة    | ٦٣٦   | سنة    |
| المدثر    | ٧٤    | ٦٣٧    | سنة    | ٦٣٧   | سنة    |
| القيامة   | ٧٥    | ٦٣٩    | سنة    | ٦٣٩   | سنة    |
| الانسان   | ٧٦    | ٦٤٠    | سنة    | ٦٤٠   | سنة    |
| المزملات  | ٧٧    | ٦٤٢    | سنة    | ٦٤٢   | سنة    |
| التبا     | ٧٨    | ٦٤٥    | سنة    | ٦٤٥   | سنة    |
| التارعات  | ٧٩    | ٦٤٦    | سنة    | ٦٤٦   | سنة    |
| عبس       | ٨٠    | ٦٤٨    | سنة    | ٦٤٨   | سنة    |
| التكوير   | ٨١    | ٦٤٩    | سنة    | ٦٤٩   | سنة    |
| الانفطار  | ٨٢    | ٦٥٠    | سنة    | ٦٥٠   | سنة    |
| المطففين  | ٨٣    | ٦٥٠    | سنة    | ٦٥٠   | سنة    |
| الانشقاق  | ٨٤    | ٦٥٢    | سنة    | ٦٥٢   | سنة    |
| البسروج   | ٨٥    | ٦٥٣    | سنة    | ٦٥٣   | سنة    |
| الطارق    | ٨٦    | ٦٥٥    | سنة    | ٦٥٥   | سنة    |
| الأعلى    | ٨٧    | ٦٥٥    | سنة    | ٦٥٥   | سنة    |
| الغاشية   | ٨٨    | ٦٥٦    | سنة    | ٦٥٦   | سنة    |
| الفجر     | ٨٩    | ٦٥٧    | سنة    | ٦٥٧   | سنة    |
| البلد     | ٩٠    | ٦٥٨    | سنة    | ٦٥٨   | سنة    |
| الشمس     | ٩١    | ٦٥٩    | سنة    | ٦٥٩   | سنة    |
| الليل     | ٩٢    | ٦٦٠    | سنة    | ٦٦٠   | سنة    |
| الضحى     | ٩٣    | ٦٦١    | سنة    | ٦٦١   | سنة    |
| الشرح     | ٩٤    | ٦٦١    | سنة    | ٦٦١   | سنة    |
| الين      | ٩٥    | ٦٦٢    | سنة    | ٦٦٢   | سنة    |
| العلق     | ٩٦    | ٦٦٢    | سنة    | ٦٦٢   | سنة    |
| القدر     | ٩٧    | ٦٦٣    | سنة    | ٦٦٣   | سنة    |
| الينة     | ٩٨    | ٦٦٣    | سنة    | ٦٦٣   | سنة    |
| الزلزلة   | ٩٩    | ٦٦٤    | سنة    | ٦٦٤   | سنة    |
| العاديات  | ١٠٠   | ٦٦٤    | سنة    | ٦٦٤   | سنة    |
| القارعة   | ١٠١   | ٦٦٥    | سنة    | ٦٦٥   | سنة    |
| التكاثر   | ١٠٢   | ٦٦٥    | سنة    | ٦٦٥   | سنة    |
| العصر     | ١٠٣   | ٦٦٦    | سنة    | ٦٦٦   | سنة    |
| الممة     | ١٠٤   | ٦٦٦    | سنة    | ٦٦٦   | سنة    |
| الفيل     | ١٠٥   | ٦٦٦    | سنة    | ٦٦٦   | سنة    |
| قريش      | ١٠٦   | ٦٦٧    | سنة    | ٦٦٧   | سنة    |
| الماعون   | ١٠٧   | ٦٦٧    | سنة    | ٦٦٧   | سنة    |
| الكوثر    | ١٠٨   | ٦٦٧    | سنة    | ٦٦٧   | سنة    |
| الكافرون  | ١٠٩   | ٦٦٨    | سنة    | ٦٦٨   | سنة    |
| النصر     | ١١٠   | ٦٦٨    | سنة    | ٦٦٨   | سنة    |
| المسد     | ١١١   | ٦٦٨    | سنة    | ٦٦٨   | سنة    |
| الاحلاص   | ١١٢   | ٦٦٩    | سنة    | ٦٦٩   | سنة    |
| الفلق     | ١١٣   | ٦٦٩    | سنة    | ٦٦٩   | سنة    |
| الناس     | ١١٤   | ٦٧٠    | سنة    | ٦٧٠   | سنة    |